साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चेतना

सुनीता ,शोधार्थी , हिंदी विभाग, महर्षि दयानद, विस्वविद्यालय, रोहतक

शोध सार :- प्रेमचंद एक गहन सामाजिक सरोकार के रचनाकार रहे हैं। उनका सरोकार रहा है -देश सेवा ,देश की उस ८०प्रतिशत जनता की सेवा जो जीतोड़ महेनत के बावजूद अपनी न्यूनतम बुनियादी जरूरतें भी पूरी करने में असमर्थ रही है। अपने युग की सम्पूर्ण राजनैतिक-सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही उन्होंने अपनी सामाजिक चेतना को साकार किया। प्रेमचंद की सामाजिक चेतना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र भारत की शोषित उत्पीड़ित जनता विशेषत: जो किसान और मजदूर के रूप में गाँवों में रहती है,उसी की वास्तविक मुक्ति रहा है। इस जनता के उद्धार के लिए प्रेमचंद ने एक व्यापक अभियान अपने साहित्य और साहित्येत्तर लेखन के माध्यम से चलाया ,'सेवासदन' से 'गोदान'तक आते - आते भीतर ही भीतर उनके विचारों में क्रन्तिकारी परिवर्तन हो चुके थे। यहाँ तक आते-आते प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद यथर्थोन्मुख आदर्शवाद बन गया था। प्रेमचंद जी ने महिलाओं से संबन्धित पारिवारिक और सामाजिक रीतिरिवाजों व परिस्थितयों को भी अपने उपन्यासों में विशेष स्थान दिया है। इनके उपन्यासों में व्यक्ति चेतना, समाज मंगल,यथार्थ की अनुभूति,आदर्श की कल्पना,आंतरिक मनोमंथन एवं भावद्व्न्द सभी कुछ मिल जाता है।

कुंजी शब्द:- मानवतावाद, अस्पृश्यता,जाग्रति,औद्योगीकरण ,सामाजिक चेतना,यथार्थवाद।

भमिका:- हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से पूर्व उपन्यास मनोरंजन का साधन माना जाता था।हिंदी में उपन्यास का शुभारंभ तो भारतेन्दु जी के समय से ही हो गया था। हिंदी के प्रथम मौलिक उपन्यास के संबंध में विद्वानों में मतभेद रहा है। इस संबंध में दो उपन्यासों का नाम लिया जाता है -श्रद्धाराम फुलौरी कृत 'भाग्यवती' सन १८७७ तथा लाला श्री निवास द्वारा कृत 'परीक्षा गुरु '१८८२। अधिकांश विद्वान 'परीक्षा गुरु ' को ही प्रथम मौलिक उपन्यास मानते हैं। जिसमे शिक्षा के साथ-साथ नैतिक आदर्श और राष्ट्र प्रेम की भावना का निरूपण हुआ है। इसी समय देवकीन्दन खत्री के उपन्यासों की बड़ी लोकप्रियता रही। ये उपन्यास तिल्सिम और ऐय्यरी से संबंधित थे। प्रेमचंद पूर्व सभी लेखक अपनी-अपनी रूचि के अनुसार उपन्यास लिखा करते थे और पाठकों के मनोरंजन हेतु घटना वैचित्र्य- प्रधान कथानकों में अधिक से अधिक चमत्कार दिखने का प्रयास किया करते थे। लेकिन प्रेमचंद जी के साहित्य का उदेश्य मनोरंजन नहीं मानते थे। उन्होंने स्वयं लिखा है--"हम साहित्य को मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमे चित्रण की स्वाधीनता का भाव हो,सौंदर्य का सार हो,सृजन की आत्मा हो ,जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो,जो हममें गति,संघर्ष और बेचैनी पैदा करे,सुलावे नहीं।" यही कारण है की प्रेमचंद के आते ही हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में स्थिरता आई,उपन्यास की रुपरेखा निश्चित हुई।

प्रेमचंद जी ने अपने मौलिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया। कोई भी साहित्यकार अपने समय की युगीन परिस्थियों से नहीं बच सकता। उनकी रचनाओं पर उस समय की परिस्थियों का व्यापक प्रभाव

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

पड़ता है। प्रेमचंद के समय में परिस्थितयां कुछ इस प्रकार थी --१ जमींदारों द्वारा निरीह किसान,मजदूर समुदाय का शोषण जिसमें विदेशी सरकार लेकर ग्रामीण साहूकार,महाजन,सरकारी-गैर-सरकारी कर्मचारी,पंडित,पुरोहित आदि समान रूप से भागीदार थे।२ स्वाधीनता के लिए चल रहा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन ,३ अंग्रेज सरकार की जनविरोधी नीतियाँ ,४देश में फैले अज्ञान,अंधविश्वास और रूढ़िवादी सामाजिक-धार्मिक रीती-रिवाज।

प्रेमचंद ने राष्ट्रीय आंदोलन,कृषक समयस्या,मानवतावाद,भारतीय संस्कृति,शोषण, विधवा विवाह ,दहेज प्रथा आदि विविध विषयों पर उपन्यास लिखकर आम जनता को समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों व शोषण से अवगत कराकर जागृत किया। उनकी सामाजिक चेतना व्यापक थी। प्रेमचंद जी ने मानव जीवन की विषमताओं का कारण अर्थ पर आधारित सामाजिक व्यवस्थाको माना है। यही कारण है की प्रेमचंद के अधिकांश उपन्यासों में आर्थिक परिस्थियाँ ही जीवन की विषमता का कारण हुई। 'सुमन'(सेवासदन) का विवाह धन के अभाव में एक निर्धन व्यक्ति के साथ हो गया। सुमन पति की परिस्थियों को अपने अनुकूल न बना सकी। उसे जीवन में ऐसी विषम परिस्थियों का सामना करना पड़ा कि उसे मज़बूरी वश वेश्यावृति अपनानी पड़ी।धन के अभाव में 'निर्मला' का विवहा एक वृद्ध वकील के साथ हो जाता है। जीवन और उत्साह से हीन वकील साहब असंभवित आशंका के शिकार हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वे अपनी पहली पत्नी के पुत्र का अपनी नई पत्नी से यौन संबंध की कल्पना कर बैठते हैं। 'निर्मला' जीवन भर अपने पति की निर्मूल धारणा को असत्य सिद्ध करने के लिए प्रयास करती रही।अंत में घुट-घुटकर उसे अपने जीवन की बलि देनी पड़ी। अनमोल विवहा का मूल कारण समाज प्रचलित दहेज प्रथा है। सेवासदन,वरदान ,गोदान,निर्मला और गबन में प्रेमचंद ने दहेज की विकृतियों का चित्रण किया।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जन्म के आधार पर ऊंच-नीच की भावना का खंडन किया है। 'कर्मभूमि 'में अछूतों के मंदिर प्रवेश की समस्या को प्रेमचंद ने व्यवहारिक रूप देकर हल किया। अस्पृश्यता के अतिरिक्त अछूतों के सामाजिक उथान और विकास पर भी 'कर्मभूमि 'में विचार किया। ढोल मरने वाले चमारों के गाँव में पहुंच कर 'अमरकांत' उनमें जाग्रति उतपन्न करता है तथा उनको सामाजिक आंदोलन के स्तर पर उठाकर राष्ट्रीय जीवन का परिचय भी उन्हें करता है। इस प्रकार प्रेमचंद ने अछूतोद्धार और अछूतों की सामाजिक स्थिति के संबंध में ठोस विचार प्रस्तुत किये।

'गोदान'तो कृषक जीवन का महाकाव्य है जिसमें कृषक जीवन की विसंगतियों का विशद चित्रण हुआ है। इसमें प्रेमचंद ने दिखाया है की किस प्रकार एक किसान का चारों तरफ से शोषण किया जाता है। जो दूसरों के लिए अनाज उगता है उसे स्वयं भरपेट भोजन नसीब नहीं होता। जीवन भर अपनी एक छोटी से इच्छा की पूर्ति के लिए संघर्ष करता रहता है। 'प्रतिज्ञा' में विधवा विवाह की समस्या को उठाया है।प्रेमचंद ने 'गोदान' में 'मालती 'के संदर्भ में पाश्चात्य संस्कृति उसके अंधानुकरण और गलत प्रभाव का विरोध किया। प्रेमचंद ने भी यह अनुभव किया कि बिना ग्रामीण समाज में जागृति पैदा किए स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त की जा सकती। इसलिए भारतीय गाँव को प्रेमचंद ने अपने साहित्य में चित्रित किया। उन्होंने 'प्रेमाश्रम' 'कर्मभूमि' 'गोदान'में जमींदारों और किशन के संघर्ष को दर्शाया है। इस संघर्ष का कारण था जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण बताया है। प्रेमाश्रम' में जमींदारी प्रथा का नग्न चित्र अंकित किया है। 'बलराज' द्वारा प्रेमचंद ने तत्कालीन जमींदारी-प्रथा का गहरा विरोध किया है। वह अफसरों की धांधली के विरुद्ध स्पष्ट कह बैठता है --"मनोहर ने अभी जवाब दिया था की बलराज बोल उठा,मेरी भैंसे बहुत दुधार है ,मन - भर दूध देती है। लकिन बेगार के नाम पर छटांक- भर भी न देगी. 'गोदान' के रायसाहब किसानों पर बेहद सहानुभूति रखतें हैकिन्तु वे किञ्चित संकोच नहीं करते। 'गोदान' के रायसाहब किसानों पर बेहद सहानुभूति रखतें हैकिन्तु बेगार लेने और नजराना वसूल करने में वे किञ्चित संकोच नहीं करते। प्रेमचंद ने जमींदार और अधिकारी

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

वर्ग के विरुद्ध जिस संघर्ष को अपने उपन्यासों में उदभूत किया है उसमे किसान वर्ग स्वयं दो विचारधाराओं में विभाजित है। एक में प्राचीन परम्परा को मानने वाले किसान हैं जिसे होरी और मनोहर के रूप में उपस्थित किया गया है तथा दूसरा रूप गोबर और बलराज के रूप जो प्रगतिवादी विचारों से प्रभावित है और शोषण का विरोध करते हैं।

यूरोप के औद्योगिक विकास का प्रभाव भारत पर भी पड़ा लेकिन प्रेमचंद जी औद्योगिकरण के कट्टर विरोधी प्रतीत होते है। 'रंगभूमि' तो औद्योगिकरण के विरुद्ध संघर्ष की कहानी है। सूरदास की पाँच बीघे भूमि को केंद्र बनाकर उसके सम्पूर्ण जीवन को औद्योगिकरण के विरुद्ध संघर्षरत चित्रित किया गया है। 'जनसेवक' पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित लाभ और प्रतियोगिता के आधार पर औद्योगिकरण को विकसित करना चाहता है तथा सूरदास उसके इस प्रयत्न का विरोध करता है उधोगपति तथा पूंजीपति साधारण किसान को मजदूर बनाकर उसे थोड़ा वेतन देकर उसके श्रम का शोषण करता है। 'गोदान' में खन्ना पूंजीपति वर्ग का प्रतिनिधि करता है तो गोबर के रूप में श्रमिक वर्ग का अभ्युदय प्रेमचंद ने दिखाया हे और उसकी सक्रियता को हड़ताल के रूप में प्रस्तुत किया है।

'कर्मभूमि' में भारत के स्वाधीनता आंदोलन की गहनता और प्रसार का चित्रण किया है। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में वेश्याओं का चित्रण सहानुभूति से किया। वेश्याओं घृणा की पात्रा नहीं है घृणा तो उन परिस्थितियों तथा रीतिरिवाजों से करनी चाहिए,जिनके कारण नारी अबला और असहाय बनकर बनकर इस कुतिसत कार्य में गरती है। प्रेमचंद की इस दृष्टि का आभास 'सेवासदन'में मिलता है। 'सेवासदन'की सुमन धनाभाव,अनमेल विवहा ,पति की संकीर्णता आदि के कारण वेश्या बनी।

निष्कर्ष : --प्रेमचंद ने साहित्य को अतिशय कल्पना प्रवणता से मुक्ति दिलाकर सामाजिक यथार्थ के ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में युगीन समस्याओं को व्यापक रूप से अपनाया है। इस प्रकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सम्पूर्ण युग के स्पंदन को ध्वनित किया है। लकिन एक जगह प्रेमचंद जी से चूक हो गई वह है उनकी पितृसतात्मक व्यवस्था से पोषित स्त्री विषयक सोच। उन्होंने 'गोदान' में मेहता के माध्यम से अपने स्त्री संबंधी विचारों को प्रकट किया है। प्रेमचंद जी की मान्यतया थी कि यदि पुरुष में स्त्रियोचित गुण आ जाएं तो वह देवता बन सकता है। दूसरी तरफ यदि नारी में पुरषोचित गुण आ जाएं तो वह कुलटा बन जाती है। अपने इस तथ्य को उन्होंने 'गोदान' में मालती के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। मालती शिक्षित,आत्मनिर्भर,निर्णय लेने में समर्थ व स्वछंद विचारों वाली स्त्री है, जिसे प्रेमचंद जी ने तितली व मधुमखी की उपमा दी है। मेरा मानना है कि यदि अत्मनिर्भरता,निडरता,साहस,निर्णयशीलता आदि गुणों का विकास ही जाए तो यह नारी मुक्ति के लिए शुभ संकेत है जो वर्षों से पीड़ित व शोषित रही है। यदि हम इस एक बिंदु को अलग कर दें तो निश्चय ही प्रेमचंद जी की सामाजिक चेतना फलक विस्तृत था।

सन्दर्भ सूचि :

१. उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चेतना--डॉ सरिता राय ,वाणी प्रकाशन ,प्रथम संस्करण १९९६ पृष्ठ संख्या ९.

२.प्रेमचंद और शरतचन्द्र के उपन्यास :मनुष्य का बिम्ब -डॉ सुरेंदरनाथ तिवारी,सुषमा पुस्तकालय पृष्ठ संख्या २६.

३. हिंदी उपन्यासों में मध्यमवर्ग--डॉ हेमराज निर्मम,विभु प्रकाशन,प्रथम संस्करण-१९७८,पृष्ठ संख्या ६६.

ISSN 2454-2695
Volume 01 Issue 10
November 2015

४. 'प्रेमाश्रम' उपन्यास -पृष्ठ संख्या ५८.

५. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार -- डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना विश्व भर्ती पब्लिकेशंस ,प्रथम संस्करण २००४।

६. 'गोदान'उपन्यास,'कर्मभूमि' उपन्यास।